कहानी - दिये जल उठे (मधुकर उपाध्याय)

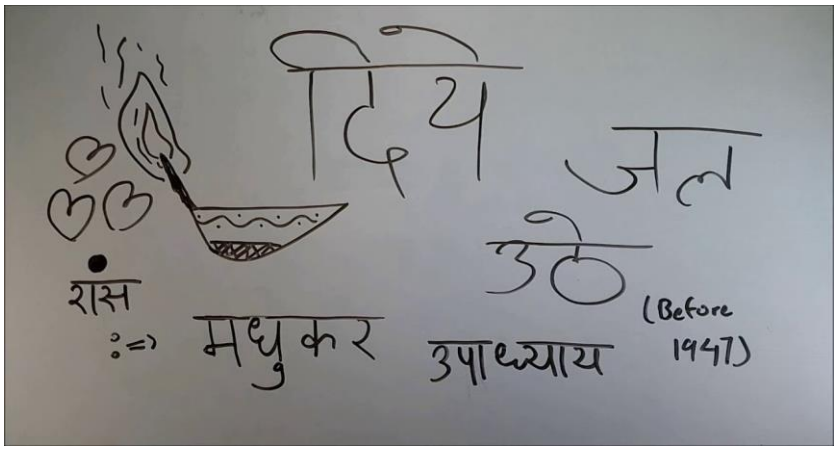

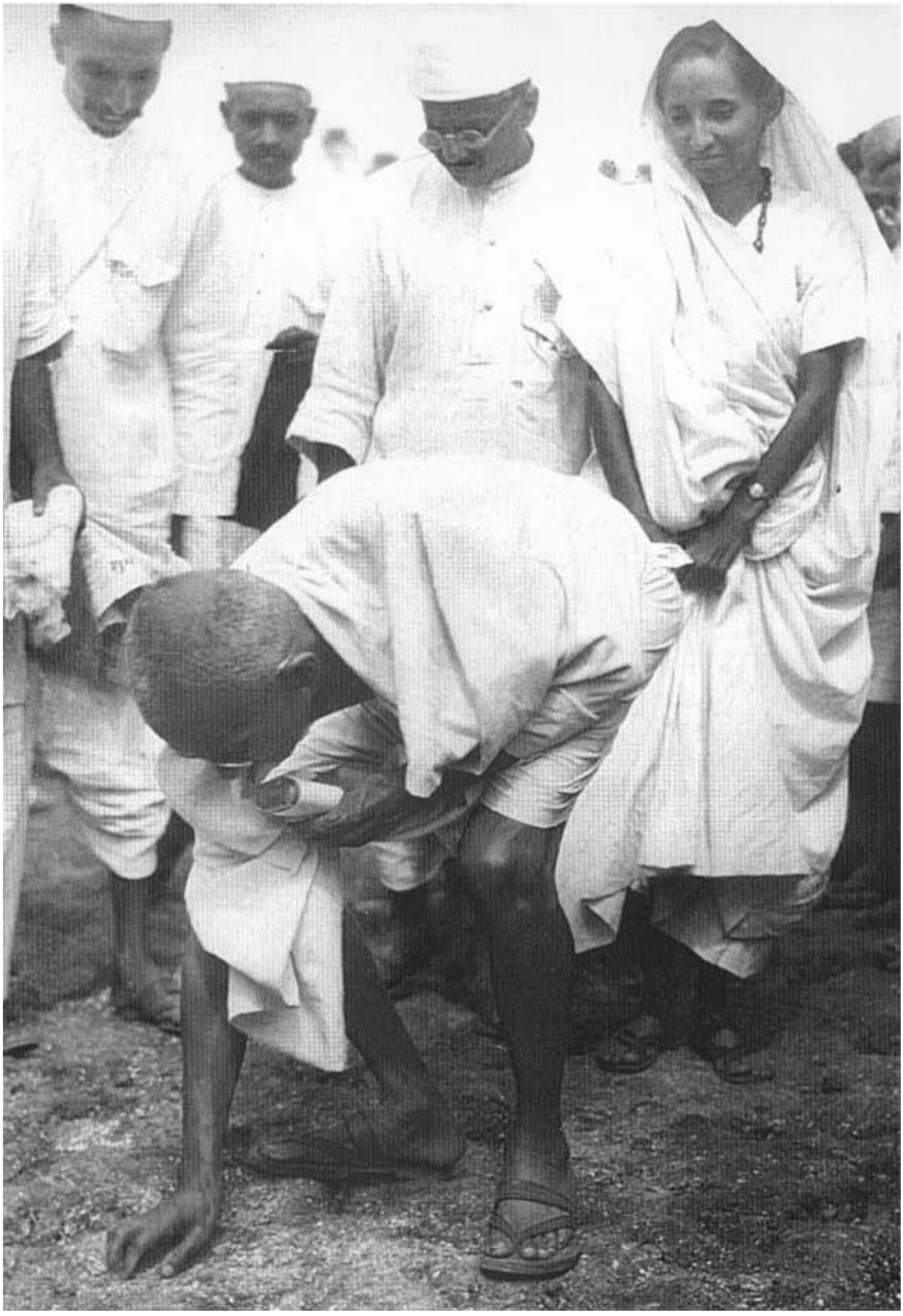

पाठ्यपुस्तक के प्रश्नोत्तर

1. स्थानीय कलेक्टर ने पटेल को गिरफ़्तार करने का आदेश क्यों दिया?

उत्तर स्थानीय कलेक्टर शिलिडी द्वारा निषेधाज्ञा लागू करने पर सरदार पटेल को गिरफ़्तार कर लिया गया। पटेल का लोगों को दो शब्द कहने के आग्रह को स्वीकार करना ही उनका अपराध था। उस शासनकाल में लोग सरकार के विरुद्ध एक शब्द भी कहने का साहस नहीं रखते थे। सरकारी आज्ञा का उल्लंघन करते ही सरकार निषेधाज्ञा लगाकर गिरफ़्तारी का आदेश दे देती थी। कलेक्टर शिलिडी को पिछले आंदोलन में सरदार पटेल ने अहमदाबाद से भगा दिया था। शिलिडी ने अवसर मिलते ही पटेल को गिरफ़्तार कर अपने अपमान का बदला ले लिया।

2. जज़ को पटेल की सज़ा के लिए आठ पंक्तियों का फैसला लिखने में डेढ़ घंटा क्यों लगा? स्पट करें।

उत्तर बोरसद अदालत में पटेल की सज़ा के लिए आठ लाईन के फ़ैसले को लिखने में जज को डेढ़ घंटे का समय लगा क्योंकि वह यह नहीं समझ पा रहा था कि उन्हें किस धारा के तहत कितनी सज़ा दी जाए। जज ने पटेल को 500 रुपये जुरमाने के साथ तीन महीने की जेल की सज़ा सुनाई। इसके लिए उन्हें अहमदाबाद में साबरमती जेल ले जाया गया। साबरमती आश्रम में सरदार पटेल को गिरफ़्तारी की सूचना गांधी जी को दी गई। इस सूचना से गांधी जी अत्यंत क्षुब्ध थे।

3. ''मैं चलता हूँ अब आपकी बारी है''–यहाँ पटेल के कथन का आशय उद्धृत पाठ के संदर्भ में स्पष्ट कीजिए।

उत्तर बोरसद से साबरमती जेल के रास्ते में आश्रम पड़ता था। सभी आश्रमवासी देश के लिए सहर्ष जेल जाने के लिए तैयार सरदार पटेल की एक एक झलक देखने को लालायित थे। गांधी जी स्वयं पटेल से मिलना चाहते थे इसलिए आश्रम के बाहर आकर खड़े हो गए। लोग समझ रहे थे कि मोटर वहाँ नहीं रुकेगी। परंतु पटेल का इतना रोब था कि पुलिस वालों को मोटर रोकनी ही पड़ी। गांधी और पटेल सड़क पर ही मिले। पटेल ने कार में बैठते हुए कहा कि मैं चलता हूँ। अब आपकी बारी है। इसका तात्पर्य यह था कि वे सहर्ष बंदी बनने जा रहे हैं। सत्याग्रहियों को संभालने का पूरा दायित्व गांधी जी को ही वहन करना पड़ेगा तथा स्वाधीनता की राह में उन्हें भी जेल का सफ़र तय करना पड़ सकता है। भारत माता को बेड़ियों से मुक्त कराने हेतु ऐसे जाने कितने तूफ़ानों से हम सबको गुज़रना पड़ेगा।

4. ''आप इन लोगों से त्याग और हिम्मत सीखें'' गांधी जी ने यह किसके लिए और किस संदर्भ में कहा?

उत्तर गांधी जी ने इस कथन को कनकापुरा और उससे सटे गाँव देवण में बसने वाले उन लोगों से कहा, जो गांधी जी के अनुयायी थे। गांधी जी ने उन्हें प्रेरणा दी कि उन्हें भी दरबार के रियासतदारों की भाँति जीवन की सुख-सुविधाओं को छोड़कर राष्ट्रहित के लिए अग्रसर होना चाहिए। गांधी जी ने यह भी समझाया कि उन दरबारियों से हिम्मत के साथ जीने की कला समझनी चाहिए।

Scanned with CamScanner

व्यक्तिगत हितों एवं स्वार्थों को त्यागकर, राजदरबार की परंपराएँ छोड़कर आधुनिक वर्तमान संस्कृति का अनुगमन करना चाहिए, ताकि वे भी गोपालदास और रविशंकर महाराज की भाँति अपनी देशभक्ति का परिचय दे सकें। गांधी जी ने यह वाक्य उस समय कहा जब वे अकेले ही रास पहुँचे। उस समय सारे देशवासी सरदार पटेल की गिरफ़्तारी से क्षुब्ध हो उठे थे। गांधी जी के बोरसद से निकलकर जलालपुर पहुँचने तक की योजना बड़ी पुख्ता ढंग से बनाई गई थी।

5. पाठ द्वारा यह कैसे सिद्ध होता है कि–'कैसी भी कठिन परिस्थिति हो उसका सामना तात्कालिक सूझ-बूझ और आपसी मेल-जोल से किया जा सकता है।' अपने शब्दों में लिखिए।

उत्तर 'दिये जल उठे' पाठ के द्वारा लेखक ने यह स्पष्ट करने का प्रयास किया है कि जिस प्रकार महिसागर नदी के किनारे लोगों ने अंधकार को दूर करने के लिए हाथों में जलते हुए दिये लेकर रात्रि की गहनता को दूर करने का सफल प्रयास किया, ठीक उसी प्रकार परिस्थिति चाहे कितनी भी कठिन हो, यदि सूझबूझ से काम लिया जाए तो बड़ी से बड़ी समस्या का समाधान किया जा सकता है। महिसागर नदी के दूसरे तट पर गांधी के पहुँचते ही दूसरा तट भी जयघोष से प्रतिध्वनित होने लगा। महिसागर नदी के दूसरे तट पर भी वैसी ही दलदली ज़मीन थी। परिस्थितियाँ दोनों तरफ एक जैसी थीं। परंतु देशवासियों के अदम्य उत्साह और सूझबूझ से, पटेल की गिरफ़्तारी के बाद भी गांधी जी का सत्याग्रह आंदोलन सफल हुआ।

6. महिसागर नदी के दोनों किनारों पर कैसा दृश्य उपस्थित था ? अपने शब्दों में वर्णन कीजिए।

उत्तर महिसागर नदी रात्रि के गहन अंधकार में सागर की ओर बढ़ रही थी। जलस्तर मध्यम था। आधीरात के समय समुद्र का पानी चढ़ने पर नही का जल स्तर बढ़ने लगा। नदी के दोनों किनारों पर कीचड़ और दलदल कम होने लगी। अंधेरी रात में गांधी को करीब चार किलोमीटर दलदली ज़मीन पर चलना पड़ा। कुछ सत्याग्रही गांधी को कंधे पर उठाकर नदी पार करवाना चाहते थे परंतु इस यात्रा को धर्मयात्रा का नाम देते हुए वे पैदल ही चलना चाहते थे। महिसागर नदी के तट पर अँधेरी रात में भी मेला लगा हुआ था। भजन मंडलियाँ भजन गा रहीं थीं। हजारों लोग हाथों में छोटे-छोटे दिये लेकर नदी के तट पर गांधी जी के मार्ग को आलोकित कर रहे थे।

7. ''यह धर्मयात्रा है। चलकर पूरी करूँगा।''–गांधी जी के इस कथन द्वारा उनके किस चारित्रिक गुण का परिचय प्राप्त होता है?

उत्तर गांधी जी के इस कथन से यह स्पष्ट होता है कि उनकी कथनी और करनी में कोई अंतर नहीं था। कनकापुरा से आगे बढ़ते हुए रेतीली सड़कों को देखकर जनसभा ने प्रस्ताव रखा कि गांधी जी कुछ दूर तक की यात्रा कार से कर लें। परंतु गांधी जी ने इस प्रस्ताव को अस्वीकार कर दिया क्योंकि यह उनके लिए साधारण यात्रा नहीं थी, अपितु उनके सत्य, अहिंसा, प्रेम के धर्म से जुड़ी हुई एक धर्मयात्रा थी। गांधी जी ने यह भी स्पष्ट किया था कि यह उनके जीवन की अंतिम यात्रा है इसलिए वे किसी वाहन का प्रयोग नहीं करना चाहते। अपने जीवन के अंत तक वे किसी भी मूल्य पर अपने सिद्धांतों से विचलित नहीं होना चाहते।

8. गांधी जी को समझने वाले वरिष्ठ अधिकारी इस बात से सहमत नहीं थे कि गांधी कोई काम अचानक और चुपके से करेंगे। फिर भी उन्होंने किस डर से और क्या एहतियाती कदम उठाए?

उत्तर ब्रिटिश हुक्मरानों में वरिष्ठ अधिकारियों का एक वर्ग ऐसा भी था जो यह मानने को तैयार नहीं था कि गांधी जी कोई काम अचानक और चुपके-चुपके करेंगे, और महिसागर नदी के किनारे अचानक नमक बनाकर कानून तोड़ देंगे। परंतु ब्रिटिश हुक्मरानों में एक वर्ग ऐसा भी था जिसे गांधी के सत्याग्रहियों पर तनिक भी विश्वास नहीं था। इसलिए सुरक्षा को मद्देनज़र रखते हुए उन्होंने नदी के तट से सारे नमक के भंडार हटा दिए और उन्हें नष्ट कर दिया, ताकि गांधी के सत्याग्रही अपने उद्देश्य में सफल न हो सकें। महात्मा गांधी के आचरण और व्यवहार पर ब्रिटिश सरकार को भरोसा कदाचित इसलिए भी था क्योंकि उन्होंने कथनी और करनी में अंतर कभी नहीं किया।

9. गांधी जी के पार उतरने पर भी लोग नदी-तट पर क्यों खड़े रहे?

उत्तर गांधी जी के महिसागर नदी के पार उतरने पर भी लोग हाथों में दिये लिए हुए नदी के तट पर खड़े रहे क्योंकि सत्याग्रहियों को भी पार उतरना था गांधी के अनुयायियों में कुछ ऐसे लोग भी थे जिन्हें सहारा देकर नदी पार करवाना था। कीचड़ और दलदली ज़मीन पर लंबे समय तक खड़े रहकर कुछ लोगों ने आंदोलन में भाग न लेते हुए भी आंदोलन की सफलता में अपना महत्त्वपूर्ण योगदान दिया।

Scanned with CamScanner

हल सहित प्रश्न

निबंधात्मक प्रश्न

1. कठिन से कठिन परिस्थितियों का सामना भी तात्कालिक सूझबूझ और आपसी मेलजोल से किया जा सकता है। पाठ के संदर्भ में इस कथन की सार्थकता स्पष्ट कीजिए।

उत्तर इस पाठ से यह स्पष्ट होता है कि आपसी मेलजोल और सूझबूझ से विकट परिस्थितियों को भी घुटने टेकने पर विवश किया जा सकता है। सरदार पटेल की गिरफ्तारी ने पूरे देशवासियों में आक्रोश भर दिया तथा गांधी जी को भी प्रभावित किया, परंतु दांडी यात्रा सफलतापूर्वक पूरी हुई। इसे रोकने के लिए ब्रिटिश सरकार के सारे प्रयास व्यर्थ सिद्ध हुए। सरकार ने तट से सारे नमक भंडार नष्ट कर दिए। परंतु वे गांधी जी के दृढ़ संकल्प को नहीं डिगा सके। गांधी जी को कंधे पर उठाकर चलने का अनुरोध किया गया। उन्हें मोटर से थोड़ी दूर चलने को भी कहा गया। परंतु इसे धर्मयात्रा का नाम देते हुए उन्होंने पैदल ही यात्रा को पूरा किया। उस कठिन परिस्थिति और घनघोर अँधेरे में भी लोगों का उत्साह और आपसी मेलजोल दीपावली की भाँति नदी के दोनों तट को आलोकित कर रहा था। स्पष्ट है कि एकता और दृढ़ निश्चय के समक्ष प्रत्येक बाधा बौनी साबित होती है।

2. सरदार पटेल की सज़ा के लिए आठ लाइन का फैसला लिखने में जज को डेढ़ घंटा क्यों लगा? यदि आप जज की जगह होते तो क्या करते?

उत्तर एक जज के लिए न्यायपालिका का स्थान मंदिर से कम महत्त्वपूर्ण नहीं होता। परंतु गलत आरोप पर गलत फैसला देना जज के लिए अत्यंत कठिन था। सरदार पटेल को जब गिरफ्तार किया गया तो वह भी स्थानीय कलेक्टर शिलिडी का ही षडयंत्र था। अपने अपमान का बदला लेने को आतुर शिलिडी ने पटेल को निषेधाज्ञा लागू कर गिरफ्तार करवाया था। ऐसे में उन पर कोई आरोप ही नहीं बनता था। नियमानुसार उन्हें सज़ा देना कानून के दायरे में नहीं था इसीलिए उसे आठ लाइन का फैसला लिखने में डेढ़ घंटे का समय लगा। यदि मैं जज के स्थान पर होता तो ऐसा नीति विरुद्ध कार्य कभी न करता। कानून का सम्मान और न्याय की रक्षा हेतु यदि मुझे त्यागपत्र भी देना पड़ता, तो भी मैं कोई समझौता नहीं करता।

3. 'इनसे आप त्याग और हिम्मत सीखें।' गांधी जी के इस कथन से कौन-से चारित्रिक गुण उभरकर सामने आते हैं?

उत्तर रास पहुँचने पर गांधी जी का भव्य स्वागत हुआ। वहाँ पर अपने भाषण में गांधी जी ने दरबारों का विशेष उल्लेख किया। कनकापुरा तथा देवण में बसे ये दरबार लोग रियासतदार होते थे। वे अपनी साहबी ठाठ, ऐशोआराम की जिंदगी को त्यागकर यहाँ बस गए थे। अपने राजपाट को छोड़कर चले आना उनके त्याग और हिम्मत का ज्वलंत उदाहरण था। दूसरी तरफ देश में कुछ लोग ऐसे भी थे जो धन के लालच में ब्रिटिश सरकार के तलवे चाटते थे। गांधी जी ने ऐसे लोगों को लालची मक्खी की तरह बताया और उनकी आत्मा को जगाने के लिए इन दरबारों का उदाहरण देते हुए कहा कि इनसे आप त्याग और हिम्मत सीखें। निश्चत रूप से देश की स्वाधीनता हेतु तन, मन और धन का सहर्ष बलिदान ही सच्ची देशभक्ति है।

4. 'दिये जल उठे' शीर्षक वर्तमान के संदर्भ में किस सीमा तक सार्थक हो सकता है?

उत्तर 'दिये जल उठे' शीर्षक पाठ के संदर्भ में पूर्णतः सार्थक है। इस वाक्यांश का शाब्दिक अर्थ दीपकों का प्रज्ज्वलित होना है। वर्तमान युग के संदर्भ में भी यह पूर्णतः सार्थक इसलिए है क्योंकि परिस्थितियाँ सर्वदा अनुकूल नहीं होतीं। अगर सूझबूझ से काम लिया जाए तो राष्ट्र के विकास में कभी भी बाधा नहीं आ सकती। जन-जन के दीपक के आलोक से आस-पास का गहन अंधकार मिटने लगता है। लोकतंत्र में प्रत्येक नागरिक का सहयोग देश को उन्नति के शिखर पर ले जा सकता है।

Scanned with CamScanner